IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, May 2025
Impact Factor: 7.67

चित्तौड़गढ़ जिले में दुग्ध उद्योग का विकास

डॉ. संध्या पठानिया

आचार्य (भूगोल विभाग)

राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपर

डॉ सोहनलाल अहीर, भूगोलवेता

सारांश (Abstract):

चित्तौड़गढ़ जिला राजस्थान का एक प्रमुख क्षेत्र है, जहाँ दुग्ध उद्योग का लगातार विकास हुआ है। इस शोध पत्र में चित्तौड़गढ़ जिले में दुग्ध उद्योग के विकास के विभिन्न चरणों, इसकी आर्थिक भूमिका, प्रमुख दुग्ध उत्पादों, सहकारी समितियों और सरकारी नीतियों का अध्ययन किया गया है। साथ ही, इस उद्योग की संभावनाओं और चुनौतियों पर भी चर्चा की गई है।

परिचय (Introduction):

दुग्ध उद्योग भारत की कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। चित्तौड़गढ़ जिले में भी इस उद्योग ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यहाँ की जलवायु, भौगोलिक स्थिति और पशुपालन की परंपरा इस उद्योग के विकास में सहायक रही है। यह उद्योग न केवल दुग्ध उत्पादकों की आय बढ़ाने में सहायक रहा है, बल्कि स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर दुग्ध उत्पादों की आपूर्ति श्रृंखला को भी मज़बूत किया है।

शोध पद्धति (Methodology):

इस अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक डेटा का उपयोग किया गया है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-27046

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, May 2025
Impact Factor: 7.67

प्राथमिक डेटा: स्थानीय दुग्ध उत्पादकों, सहकारी समितियों और उपभोक्ताओं से साक्षात्कार लेकर एकत्र किया गया। विभिन्न दुग्ध उत्पादन इकाइयों और उनके कार्य प्रणाली का निरीक्षण भी किया गया।

द्वितीयक डेटा: सरकारी रिपोर्ट, अनुसंधान पत्र, कृषि विभाग के दस्तावेज़ और अन्य प्रकाशित स्रोतों से प्राप्त जानकारी का विश्लेषण किया गया।

भौगोलिक स्थिति (Site Location):

चित्तौड़गढ़ जिला राजस्थान के दक्षिणी भाग में स्थित है। यह जिला अपने ऐतिहासिक महत्व और दुग्ध उत्पादन में योगदान के लिए जाना जाता है। यहाँ विभिन्न दुग्ध सहकारी समितियाँ कार्यरत हैं, जो किसानों को उचित मूल्य पर दूध बेचने में सहायता करती हैं। साथ ही, यह क्षेत्र जलवायु और भूमि की उपलब्धता के कारण पशुपालन के लिए अनुकूल माना जाता है।

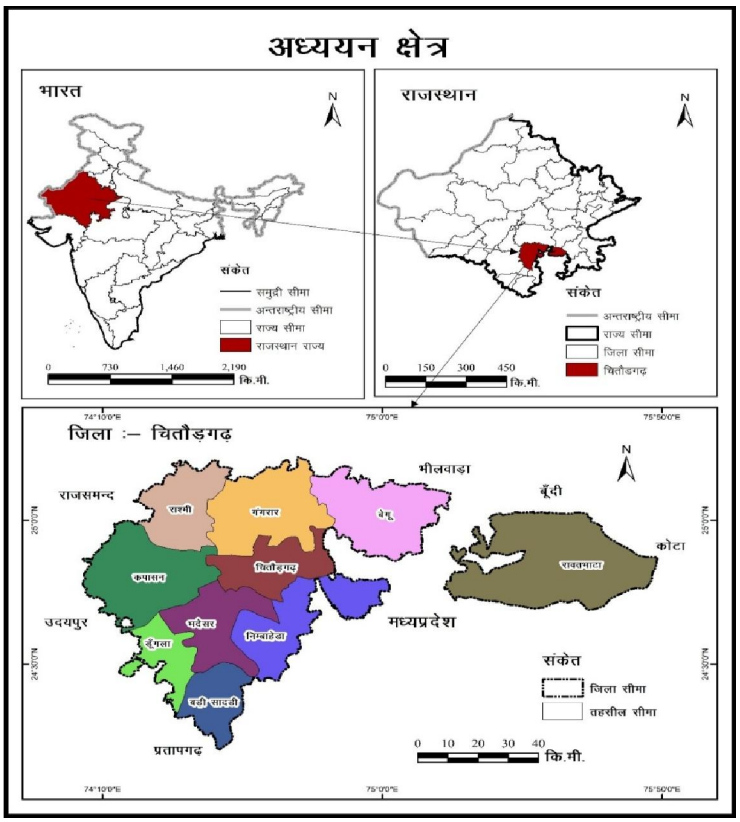

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 9, May 2025 Impact Factor: 7.67

चित्तौड़गढ़ में दुग्ध उद्योग का ऐतिहासिक विकास (Historical Development of Dairy Industry in Chittorgarh): चित्तौड़गढ़ जिले में दुग्ध उत्पादन की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। कृषि के साथ-साथ यहाँ पशुपालन को भी महत्व दिया जाता रहा है। समय के साथ, यह उद्योग संगठित रूप लेने लगा और सहकारी समितियों की स्थापना हुई। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सरकार की ओर से डेयरी विकास योजनाएँ शुरू की गईं, जिससे दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी हुई।

सरकारी योजनाएँ और नीतियाँ (Government Schemes and Policies):

राजस्थान सरकार और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB) ने चित्तौड़गढ़ में दुग्ध उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिए कई योजनाएँ चलाई हैं। इनमें प्रमुख हैं:

ऑपरेशन फ्लड प्रोग्राम: इससे दूध उत्पादन और वितरण प्रणाली में सुधार हुआ।

राष्ट्रीय डेयरी योजना: इस योजना के तहत दुग्ध प्रसंस्करण संयंत्रों की स्थापना और किसानों को सब्सिडी दी गई।

पशुपालन सुधार योजनाएँ: दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए उच्च गुणवत्ता वाली गायों और भैंसों को प्रोत्साहित किया गया।

सहकारी समितियों की भूमिका (Role of Cooperative Societies):

चित्तौड़गढ़ में दुग्ध उत्पादन में सहकारी समितियों की अहम भूमिका रही है। ये समितियाँ दुग्ध उत्पादकों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने, दुग्ध प्रसंस्करण सुविधाएँ उपलब्ध कराने और विपणन में सहायता प्रदान करने का कार्य करती हैं। प्रमुख सहकारी समितियाँ इस प्रकार हैं:

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, May 2025
Impact Factor: 7.67

चित्तौड़गढ़ दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति।

राजस्थान दुग्ध महासंघ।

स्थानीय ग्राम स्तर की सहकारी समितियाँ।

तकनीकी प्रगति और नवाचार (Technological Advancements and Innovations):

स्वचालित दुग्ध प्रसंस्करण संयंत्रों की स्थापना।

कृत्रिम गर्भाधान तकनीकों का उपयोग।

किसानों को दुग्ध उत्पादन में नवीनतम तकनीकों का प्रशिक्षण।

शीतलन संयंत्रों की स्थापना से दूध के संरक्षण में सुधार।

आर्थिक प्रभाव (Economic Impact):

चित्तौड़गढ़ जिले में दुग्ध उद्योग का आर्थिक प्रभाव महत्वपूर्ण है। इससे लाखों ग्रामीण परिवारों की आय में वृद्धि हुई है और महिलाओं को भी आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिला है। साथ ही, यह उद्योग राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर दुग्ध व्यापार में योगदान कर रहा है। इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए शोध क्षेत्र चितौड़गढ जिले में दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ के सदस्यो एवं गैर सदस्यों की आर्थिक स्थिति को जानने के लिए लिकर्ट महोदय की पांच बिन्दू मापनी पर उत्तरदाताओं से पूछा गया कि उनकी आर्थिक स्थिति में किस हद तक सुधार हुआ है। उनके द्वारा दिए गए उत्तर को **1** से **5** तक अंक दिए गए। **1** अंक बताता है कि बहुत ही कम अथवा नगण्य और **5** अंक दर्शाता है। अत्यधिक सुधार हुआ है। उत्तरदाताओं द्वारा दिए गए उत्तर को दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ के सदस्यों तथा गैर सहकारी संघ के सदस्यों को दो ग्रुप में विभाजित किया गया और उनके माध्य अंक की तुलना परीक्षण किया गया।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, May 2025
Impact Factor: 7.67

दोनों की आर्थिक स्थिति के माध्यों की तुलना का परीक्षण किया गया जो तालिका **7.12** के अनुसार है।) **t**4.359=**, p<** (0.001परीक्षण के परिणाम यह दर्शाते है कि दोनों के मध्य उच्च सार्थक अन्तर है। अतः दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ के सदस्यों की आर्थिक स्थिति गैर सदस्यों से बेहतर है।

चुनौतियाँ और समाधान (Challenges and Solutions):

चुनौतियाँ:

पशुओं के लिए चारे और पानी की कमी।

आधुनिक प्रसंस्करण सुविधाओं की सीमित उपलब्धता।

बाजार में दूध की कीमतों में अस्थिरता।

संभावित समाधान:

सरकार द्वारा अनुदान और तकनीकी सहायता प्रदान करना।

सहकारी समितियों को और अधिक सशक्त बनाना।

आधुनिक दुग्ध प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना।

निष्कर्ष (Conclusion):

चित्तौड़गढ़ जिले में दुग्ध उद्योग का निरंतर विकास हो रहा है, जिससे किसानों और उपभोक्ताओं को लाभ हो रहा है। उचित नीतियों, तकनीकी उन्नयन और सहकारी समितियों की सहायता से यह उद्योग और अधिक प्रगति कर सकता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, May 2025
Impact Factor: 7.67

संदर्भ (References):

- सक्सेना, एच.एम (**2015**). राजस्थान का भूगोल, राजस्थान का हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृ. **2-3**
- राजावत, बी. (**2006**). *जनजप्रतिनित्व एवं क्षेत्रीय विकास.* (अप्रकाशित शोध प्रबंध) मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
- Sharma, Smita (1985). Udaipur Dairy – A Study in Industrial Geography, (Unpublished M.Phll thesis) Sukahadia University, Udaipur
- www.animalhusbandry.rajasthan.gov.in
- www.indiadiary.com
- www.planningcommission.gov.in
- www.fao.org
- www.indiamilkproducts.com
- www.dahd.nic.in
- www.agriculture.industry.india.com
- www.sarasmilkfed.coop
- www.nddb.org
- www.drdc.com.au
- www.windy.com